चाक' उपन्यास में लोक जीवन के विविध आयाम

बलवीर सिंह राठौड[1] , डॉ. राजेश कुमार शर्मा

[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग (कला संकाय) , भगवंत विश्वविद्यालय , अजमेर

[2]शोध निर्देशक, वरिष्ठ व्याख्याता : हिन्दी विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

सारांश : 'चाक' उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा का सुप्रसिद्ध उपन्यास है। 'इदन्नमम' के पश्चात् 'चाक' मैत्रेयी पुष्पा की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। गाँव को रग–रेशों में जीता हुआ आत्मीय दस्तावेज – पुरूष समाज में स्त्री की अपनी पहचान का संकल्प पत्र। 'चाक' घूमता है ब्रज प्रदेश के किसानों के बीच। 'चाक' का दूसरा नाम है समय–चक्र। चाक घूमेगा और मिट्टी को बिगाड़ कर नया बनाएगा। नए रूप में ढ़ालेगा। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में 'स्त्री विमर्श व लोक जीवन' की भीनी–भीनी खुशबू है।

राजेन्द्र यादव के शब्दों में, ''मैत्रेयी न वक्तव्य देती है न भाषण। वह पात्रों को उठाकर उनके जीवन और परिवेश को पूरी नाटकीयता में देखती है। ..... मुहावरे दार जीवंत और खुरदरी लगने वाली भाषा की गवई ऊर्जा मैत्रेयी पुष्पा का ऐसा हथियार है जो उन्हें समकालीन कथाकारों में सबसे विशिष्ठ और अलग बनाती है।''

समूचा लोक जीवन मानवीय क्रिया–कलापों के सूत्र को लेकर चलता है। ''लोक जीवन अंचल विशेष के समग्र व समेकित संश्लिष्ट जीवन को रूपायित करता है। आँचलिकता व लोकतत्व का घनिष्ठ संबंध है।'' 2 साहित्य और लोक जीवन का घनिष्ठ संबंध है। भारत की पचहत्तर प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। इन्हीं गाँवों में भारत की सभ्यता, संस्कृति व लोक जीवन, आँचलिकता की झलक मिलती है। महात्मा गाँधी के अनुसार, ''भारतवर्ष की आत्मा गाँवों में निवास करती है।''

परिचय :

बीसवीं सदी के उत्तार्द्ध की सशक्त महिला कथाकार है मैत्रेयी पुष्पा। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में लोक जीवन साकार हो उठा है। लोक जीवन, लोक विश्वास, लोक मान्यताएँ, लोक परम्पराएँ, लोकाचार, रीति–रिवाज, लोक संस्कार, व्रत–त्योहार, मेले, उत्सव, लोकगीत, लोक नृत्य, आस्था, छुआछूत, स्थानीय रंग की राजनीति, अशिक्षा, गरीबी, भाषा में आँचलिकता व अनूठी नव्यता, सामाजिक व सांस्कृतिक सरोकार जैसे लोक जीवन के विविध आयाम मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में भरे पड़े हैं।

'चाक' उपन्यास के केन्द्र में है 'अतरपुर गाँव'। अतरपुर गाँव जाट किसानों का गाँव है और जैसा है वैसा ही बने रहना चाहता है। वह हर बदलाव का विरोधी है। यथा स्थिति में जब परिवर्तन होता है, कुछ मूल्य और विश्वास टूटते हैं। हर विकास परम्परागत मान्यताओं को बदलता और तोड़ता है। सारंग नहीं जानती कि इस परिवर्तन और विकास की शिकार है या सूत्रधार। ''इतिहास कागज के पन्नों पर उतरने से पहले मानव शरीरों पर लिखा जाता है।'' अतरपुर में रहने वाली किसान पत्नी सारंग की यात्रा की कहानी है यह उपन्यास।

'सारंग' नायिका है, जो नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती है, जो स्वतन्त्र जीवन की समर्थक है। मैत्रेयी पुष्पा का बचपन गाँव में व्यतीत हुआ। वहाँ के लोक जीवन की छाप उनके व्यक्तित्व पर पड़ी है और वहीं उनके उपन्यासों में उद्घाटित हुई। उनके उपन्यास 'चाक' में लोक जीवन की भीनी–भीनी खुशबू है।

'चाक' में लोक जीवन के विविध आयाम :

स्थानीय रंग : जातियता की रंगत – 'चाक' उपन्यास में अतरपुर गाँव के लोक जीवन में स्थानीय रंग की रंगत सर्वत्र है। जहाँ ब्राह्मण, बनिया, जाट जाति की ऊँची कोम है, वहीं कुम्हार, तेली, खटीक, चमार, नाई जाति है। जातिगत भेदभाव सर्वत्र है। ''छोटी जात वाले किसान साग–सब्जी उगाकर गाँव की जरूरतें पूरी करते थे। बदले में बड़े किसान उन लोगों को गुड़, चना, मटर, जौ, दालें और भैसों का दूध, घी देते थे।'' 3

मूहुर्त तथा शकुन–अपशकुन –

'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने लोक जीवन में मूहुर्त तथा शकुन–अपशकुन का यत्र–तत्र चित्रण किया है। बौहरे कहता है, ''चुप रह रे खटीक के। ऊँच–नीच एक हो रहे हैं तो क्या घड़ी–महूरत, विधि–विधान अकारथ हो जाए ?'' 4 सारंग चंदन पर टोटका करती है, ''अपनी मुट्ठी में दबाकर राई, नौन और मिर्च ले आई चलती बेला, लपककर बेटे की बराबरी में पहुँची, सात बार उतारा और पिछवाड़े को मिट्टी उछाल दी।'' 5

ज्योतिष – लोक जीवन में ज्योतिष का विशेष महत्व है। अतरपुर गाँव के लोग ज्योतिष के पत्रा–पंचांग में विश्वास करते हैं और अटूट श्रद्धा रखते हैं। 'चाक' उपन्यास में पंडित चरणसिंह बौहरे कहते हैं, ''एक दीपक सास के थान पर। दूसरा गाँव के सिवाने पर। तीसरा पथवारी पर। चौथा खेत में। पाँचवा मंदिर में। छठा घेर में।'' 6

अंधविश्वास – अतरपुर गाँव के लोग घोर अंधविश्वासी है। सारंग प्रतिज्ञा करती है, ''द्रोपदी की तरह प्रण लिया था कि डोरिया को हाथों में हथकड़ी लगेगी, तब बालों को समेटूँगी।'' 7

मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' उपन्यास में जिस लोक जीवन, लोक सभ्यता व लोक संस्कृति का चित्रण किया है, वह अनूठी है, बेमिसाल है। ''सभ्यता शरीर का आभूषण है और संस्कृति आत्मा श्रृंगार है।'' 8

स्थानीय रंग की राजनीति – 'चाक' उपन्यास में स्थानीय रंग की राजनीति चरम शिखर पर है। सारंग का पति (रंजीत) अगले प्रधान चुनाव में खड़े होने का मनसूबा बना रहा है। मैत्रेयी पुष्पा का कथन है, ''राजनीति और रंडी किसी की सगी नहीं होती है।'' 9 'चाक' उपन्यास में रंजीत जो सारंग का पति है, चुनाव में सारंग उसके विरूद्ध खड़ी होती है। जिसमें स्थानीयता की रंगत है।

ग्रामीण आर्थिक संरचना – लोक जीवन में आर्थिक संरचना (गरीबी) के अपने मायने है। गाँव के अधिकतर लोग खेती, पशुपालन पर निर्भर है। ''सचमुच इस गाँव में व्यापार का कोई माहौल नहीं है। मुझे यहाँ रहकर अपनी प्रकृति, योग्यता और बुद्धि तक पर शक होने लगा है।'' 10

मेले उत्सव और त्योहार – 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने लोक जीवन में स्थानीय मेले, उत्सव, त्योहारों का विशेष महत्व बताया है। इन मेलों, उत्सवों और त्योहारों में लोक जीवन व लोक संस्कृति झलकती है। ''नहा धोकर बसंती रंग की धोती पहनी है गुलकंदी ने। बसंत पंचमी के मेले में जा रही है। ..... पाँच रूपइया दै दै री अम्मा मैं मैला कूँ जाऊँगी।'' 11

'चाक' उपन्यास में लोक उत्सवों, त्योहारों जैसे – जन्माष्टमी, बरखा पर्व, करवा चौथ, जलवा पूजन, चट्टा चौथ, अक्षय तृतीया, दीपावली, होली, रक्षाबंधन, मकर सक्रान्ति में स्थानीयता की मीठी–मीठी मधुर गंध आती है। करवा चौथ के अवसर पर, ''सारंग ने मुँह अँधियारे ही चौका–आँगन लीप लिया था। गुलकंदी को बुलाकर भीगे चावलों का ऐंपन पिसवाया। गेरू से दीवार पोती। करवा चौथ काढ़ने में सारंग के जोड़ की कोई औरत नहीं।'' 12 आज ब्याहवाली साड़ी पहनी है सारंग ने। गुलाबी रेशमी साड़ी की हरी फूलदार किनारी। माथे पर लाल बिन्दी। आँखों पर काजल। पाँवों में पायजेब, गले मे हँसली और कानों में झूमकी झिलमिला रही है। ..... सोने का और सारंग का एक रंग।

लोक कलाएँ – 'चाक' उपन्यास में लोक कलाएँ, लोक कथाएँ, खेल तमाशे, वाक् युद्ध जैसे महत्वपूर्ण लोक जीवन के विविध आयामों का चित्रण हुआ। अतरपुर गाँव में ढ़ोला–आला, राजा पिरथम, रानी मंझा की कथा आदि लोक कथाओं को लय, स्वर, ताल के साथ सुनने को मिलती है। चरणसिंह बौहरे कहते है, ''धरम–करम और ढ़ोला–आला में पार्टीबंदी नहीं चलती है। ये सब गाँव की विरासत में आते हैं, ये सबके हैं। तुम कलाकार और कला को ..... ।'' 13 अतरपुर गाँव में खेल तमाशे जैसे दंगल (पहलवानी) में साधजी का परिवार प्रसिद्ध है। केलासीसिंह कहता है कि, '' ..... अखाड़े की धूल ही मेरी दुनिया होगी–बस।'' 14

लोक संस्कार व आचार–विचार – 'चाक' उपन्यास में लोक आचार व लोक संस्कार की अभिव्यक्ति मिलती है। विसुन देवा ने ''राजघाट के स्वामी की सेवा की, पद सीखे। मुंडन–कनछेदन–महूरत संस्कार खूब किए, कमाया।'' 15 अक्षय तृतीया के अवसर पर लोक जीवन में पहली जोत लगेगी खेत में। सात कुँआरी कन्या जाएँगी खेत पर किसानों को बीज देने। चलो, सब खेतों पर चलो।

रीति–रिवाज और प्रथाएँ – 'चाक' उपन्यास में अतरपुर गाँव में लोक रीति–रिवाजों एवं प्रथाओं की गूंज है। चंदना की वेशभूषा लोक जीवन में रंगी हुई है। ''चंदना की झीनी गुलाबी चुनरी और लम्बा घूँघट, नाक की नथुरिया बिजुरी सी चमकी। उठती–गिरती पलकें।'' 16 रंजीत कहते है, ''पीढ़ियों से चले आ रहे रीति–रिवाजों से ऊपर हो जायेगी। बिरादरी की मर्यादा को भंग करने का अधिकार किसी को नहीं।'' 17

लोकगीत – लोकगीत लोक जीवन का प्राण तत्व है। 'चाक' उपन्यास में लोकगीतों की भरमार है। चम्पाराम और झज्जू गीतों के खजानें हैं।

''कान्हा बरसाने में आ जइयो बुला रही राधा प्यारी
बुला रही राधा प्यारी रे, बुला रही राधा प्यारी/कान्हा .....
सोने को लोटा गंगाजल पानी,
अब तेरी गरज पड़े तौ पी जइयौ। बुला रही राधा प्यारी।'' 18

अध्ययन के निष्कर्ष –

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में लोक जीवन के विविध आयाम स्थापित है। जिसमें लोक जीवन, लोक चेतना भरी पड़ी है। अतरपुर गाँव में लोक जीवन है, लोक पर्व है, लोकगीत है, लोक उत्सव है, लोक रीति–रिवाज, परम्पराएँ, तीज–त्योहार, लोक आहें–कराहें है, धूप है और अंचल में धूल है।

ज्ञानरंजन के शब्दों में – ''जिस लोक जीवन से हमारी रचनात्मक धारा काफी पहले विमुख हो चुकी थी। उसकी अनेक परतें मैत्रेयी पुष्पा ने खोल दी है।'' 'चाक' उपन्यास में रूढ़ियों व परम्पराओं की भरी पूरी दुनिया, भाषा और मुहावरें में भी मिट्टी की गंध।''

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. मैत्रेयी पुष्पा : गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 231
2. डॉ. आनन्द मोहन उपाध्याय : फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का लोकतात्विक अध्ययन, पृ.सं. 60
3. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 25
4. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 126
5. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 63
6. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 197
7. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 17
8. डॉ. आधाप्रसाद त्रिपाठी : सूर साहित्य में लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति, पृ.सं. 23
9. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 30
10. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 54
11. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 251–52
12. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 186
13. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 82
14. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 99
15. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 208
16. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 13
17. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 16
18. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 356